निजात का रास्ता

जनाब हज़रत मौलाना
सय्यद अबुल हसन अली

नदवी मद्दज़िल्लहुल आली

की

बरख़ुरदार पुर में

बहुत बड़े मजमे में की गई तक़रीर पेशे ख़िदमत है

छपवाई गई--

ज़काउल्लाह ख़ां

सदर इस्लाहुल मुसलेमीन कमेटी

खजूरी रुंडा, तहसील गरोठ, ज़िला-मन्दसौर

व

मोहतमिम मदरसा साबिरा

बाबा फ़रीद नगर कालोनी, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

www.abulhasanalinadwi.org

अऊज़ोबिल्लाहि मिनशशैतॉनिररजीम ● बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

''वमा अरसलना मिररसूलिन इल्ला लि युताअ बिइज़निल्लाह'' पारा ५ रु. ६

''हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर यह कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत की जाए (उसका कहना माना जाए और उसकें कहने पर अमल किया जाए)

मेरे भाईयों, अज़ीज़ों, दोस्तो।

मैं सब से पहले तो आपके सामने अपनी ख़ुशी का इज़हार करता हूँ मुझे बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि यहाँ, इस गांव में इतना बड़ा जलसा होगा और इसका इतना अच्छा इतंज़ाम होगा और रोशनी का भी इस क़दर बन्दो-बस्त होगा और आप लोग दूर-दूर से रात के वक्त यहाँ पर इकट्ठा होंगे

यह अल्लाह तआला का फ़ज्लोकरम है और यह सिर्फ़ तौफ़ीके इलाही (अल्लाह तआली की मरज़ी) से ही हुआ है अब आप, इसकी कोशिश कीजिए कि आप यहाँ से कुछ लेकर जाएं और तै करके जाएं कि हमें फ़ाइदा उठाना है। अपनी ज़िन्दगियों को बदलना है। **अपने सब कामों को शरीअत के सांचे में ढालना है (इस्लामी कानून के तहत ज़िन्दगी गुज़ारना है)**

इस्लाम की तासीर और सच्चे मुसलमान की हैसियत-

ज़रा ग़ौर कीजिए कि किसी मशीन में कोई चीज़ ढाल दी जाती है तो कैसी अच्छी बन कर निकलती है यह रॉड, बल्ब, लाउडस्पीकर जो आप देख रहे हैं। एक ख़ास तरीक़े से बनाए गए हैं, साइनटिफ़िक तरीक़े सें बनाए गए हैं और आपके सामने

www.abulhasanalinadwi.org

हैं तो अगर ईमान और नबुवते मुहम्मदी के सांचे में कोई चीज़ ढाल दी जाए (ईमान और इस्लाम के तरीक़े के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारना शुरू कर दिया जाए) तो वह ज़िन्दगी कितनी अच्छी होगी। क्या दुनिया में कोई चीज़ उससे बढ़ कर दिल को भाने वाली, उससे बढ़कर क़ीमती और अल्लाह के दरबार में मक़बूल हो सकती है? अल्लाह तआला ने तो यह दौलत, नैमत, हमको दी कि हमारा एक आदमी (एक सच्चा पक्का मुसलमान) किसी देश में चला जाए तो पूरा मुल्क (देश) मुसलमान हो जाए और यह हुआ है तारीख़ (इतिहास) में इसकी मिसालें मौजूद हैं। यह **इन्डोनेशिया और मलेशिया** (यह देश हिन्दुस्तान के पूर्व में हैं) जहाँ इस्लामी फ़ौज नहीं गई। तारीख़ (इतिहास) में कहीं उसका रिकार्ड नहीं मिलता कि किसी मुसलमान बादशाह ने वहाँ फ़ौज भेजी हो। क्या हुआ? हुआ यह कि सच्चे पक्के मुसलमान गए। वहाँ के लोगों ने उनके चाल चलन देखे। उनकी ईमानदारी देखी, उनकी हमदर्दी देखी। उनका एक दूसरे से बरताव देखा अल्लाह का डर, अल्लाह से मोहब्बत, इस्लामी कानून की पैरवी, नमाज़ों की पाबन्दी, उनके अन्दर पूरी इस्लामी बातें देखी यहाँ तक की जिन लोगों ने वहाँ व्यापार करना शुरु किया और आना जाना शुरु किया तो उनके सब़ कामों और बातों को देखकर सैकड़ों लोग मुसलमान हो गए।अंग्रेज मुसनेफ़ीन (लेखक) ने यह बातें लिखीं हैं अंग्रेज मुसनेफ़ीन (लेखक) **आरन्लड** की किताब **"प्रीचिंग ऑफ इस्लाम"** देखिए। उसमें आपको मिलेगा कि एक कपड़े के मुसलमान व्यापारी थे। उनसे किसी ने कपड़ा ख़रीदा और कपड़े की क़ीमत देकर कपड़ा लेकर चला गया। बाद में

www.abulhasanalinadwi.org

उन मुसलमान व्यापारी को याद आया कि कपड़े में ख़राबी थी। (एब था) तो वह व्यापारी उस कपड़े वाले को ढुंढते फिरे कि कहीं वह आदमी मिल जाए तो उसको कपड़े का ऐब बता दिया जाए जो क़ीमत ज़्यादा ली है वह ऐब की वजह से कम ली जाए। तलाश करते, करते उनको ढुंढ निकाला और उनसे कहा कि भाई साहब हमने आपको जो कपड़ा दिया था और जो पैसे लिये थे वह यह समझ कर लिए थे कि कपड़े में कोई एब नहीं है कोई ख़राबी नहीं है लेकिन फिर मुझे याद आया कि कपड़े में कुछ ख़राबी है। इसलिए वह कपड़ा उस क़ीमत का नहीं है जितने में आपको बेचा था। इसलिए यह ज़्यादा पैसे वापस लीजिए। इस बात का उस आदमी पर बहोत असर हुआ वह जानता भी नहीं था कि दुनिया में ऐसे आदमी भी हैं।

एक वाक़ा और सुनियेगा।

एक जहाज़ पानी का आया करता था। और उस पर शैतान का कुछ असर था। कि वह आता और एक आदमी को उठाकर ले जाता और वह आदमी मर जाता था। इसलिए लोग उस जहाज़ से डरा करते थे कि पता नहीं अब की किस की बारी है और किस की मौत आने वाली है एक **अरब मुसलमान थे** उनको यह बात कही गई। उन्होंने कहा अच्छा हम देखते हैं तो जहाज़ आता दिखाई देने लगा तो उन अरब मुसलमान ने **"अज़ान"** देना शुरू की बस जहाज़ वहीं रुक गया। और उसके बाद उन लोगों को हमेशा के लिए इस बात से छुटकारा मिला और उनके आदमी इस तरह से मरना बंद हुए। यह थी सच्चे मुसलमानों की ज़िन्दगी

अल्लाह तआला से डरो, अल्लाह तआला तुमको इज़्ज़तअता फ़रमाएगा–

और अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है **"या अय्युहललर्जीना आमनू इन तत्तुकुल्लाह यजअल्लकुम फ़ुरक़ाना"** पारा ९ रु.१८ ए ईमान वालो। अगर तुम अल्लाह तआला से डरोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें शाने इमतियाज़ी अता फ़रमाएगा।

यह साईन बोर्ड क्या चीज़ है। रोशनी क्या चीज़ है। यह रास्ता बताने वाली है और मुसलमानों का नूर मीलों, कोसों, कई किलोमीटर तक बलकि एक देश से दूसरे देश पहुंच जाता है। यह बड़ी इज़्ज़त की बात है कि आप लोग दीन की ख़ातिर इकट्ठे हुए हैं। इसकी हमारे दिल में क़द्र है। इज़्ज़त है हम तो **राएबरेली** के ही एक गांव के रहने वाले हैं और यह जगह जहाँ आप जमा हैं **राएबरेली** का ही पड़ोस है। यह **बरखुरदार पुर** जिस को हम एक गांव समझते थे हमें यह मालूम नहीं था कि यहाँ इतने भाई शोक़ और हिम्मत से इकट्ठा हो जाएंगे। बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि हम यहाँ आते। एक बात कहने की यह है कि आप यहाँ जमा तो हुए हैं यह जमा होना (इकट्ठा होना) आपके लिए बेकार न जाए। आप यहाँ से कुछ.लेकर जाईए। यह नहीं कि एक अच्छा वक्त गुज़र गया। बस काफ़ी है। बड़ा मज़ा आया। अच्छी अच्छी, नज़मे (कविताएँ) पढ़ी। ज़ोरदार तक़रीरें हुई यह नहीं बलकि ज़िन्दगी (जीवन) बदल जाए यहाँ से यह फ़ैसला करके जाईए कि अब हम मुहम्मदी सांचे में (हज़ार हज़ार दरूदो सलाम हों हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहोअलेहि व

www.abulhasanalinadwi.org

सल्लम पर) हम इस्लाम के सांचे में हम शरीअत के सांचे में अपनी ज़िन्दगी को ढाल देंगे। और इस सांचे से ढलकर अब ज़िन्दगी निकलेगी और इस तरह से आप अपने गांव के लिए ही नहीं बल्कि आस-पास के लिए भी, गैर मुसलिमों के लिए भी एक नमूना, एक रोशनी बन जाएंगे। ओर आपकी रोशनी तो दूर दूर तक जाएगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है **"नूरो हुम यसआ बैना एदी हिम"** (२८ पारा रू. २०) अल्लाह तआला का फ़रमान ईमान वालों कि लिए है कि उनका नूर उनके आगे आगे चलता है। उनका नूर दौड़ता है उनके आगे और यह उस वक्त होगा जब आप कुछ फ़ैसला करलें। अपनी ज़िन्दगी को इस्लाम के सांचें में ढालने का। हमने आपके सामने कुरआन शरीफ़ की आयतें पढ़ी। इन्हीं को आप समझ लें और दिल में उतार लें कि अल्लाह तबारक तआला ने दीने इस्लाम का सिलसिला इसलिए जारी किया और अपने सबसे प्यारे बन्दे। सब से अच्छे बन्दे और सबसे आला तरीन बन्दे को **"रहमतुललिल आलमीन"** बनाकर दुनिया में भेजा। **रहमतुल्ललिल आलमीन** क्यों कहा इसलिये कि आप सचमुच में सारी दुनिया के लिए रहमत हैं क्या यह बहार, और क्या यह बारिश और क्या यह ठन्डी हवाएँ कोई भी चीज़ इस के सामने कुछ हैसियत नहीं रखती (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम की नबुव्वत के सामने, त़ालीम के सामने) हर काम में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नक़्शे क़दम पर चलो (आपके बताए हुए त़रीक़े पर चलने की कोशिश करो)

अल्लाह तआला फ़रमाता है **"वमा अरसलना मिर**

www.abulhasanalinadwi.org

रसूलिनइल्ला लियुताअ बिइज़निल्लाह'' (हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर यह कि अल्लाह के हुक्म से उसकी ताबेदारी की जाए।) उसकी बातें मानी जाएं। उसके नक़्शे क़दम पर चला जाए और यह भी फ़रमा दिया है **''लक़द कानालकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उसवतुन हसनह''** पारा २१ रु. १९ (तुम्हारे लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की ज़िन्दगी (जीवन) एक बहुत अच्छा नमूना है।) अल्लाह तआला ने जहाँ यह फ़रमाया है कि हमने नहीं भेजा कोई रसूल मगर यह कि उसकी बात मानी जाए। वहीं यह भी बता दिया है कि अगर लोग आपके पास आते तोबा करते, गुनाहों का इक़रार करते बख़शिश चाहते तो अल्लाह तआला उनके साथ ख़सूसी मामला फ़रमाता और अल्लाह तआला फ़रमाता है **''फलाव रब्बिका लायूमिनूना हत्ता योहक्किमूका फ़ीमा शजरा बैन हुम''** पारा ५ रु. ६ (नहीं ख़ुदा की क़सम उनका ईमान नहीं कहलाया जा सकता जब तक कि यह आपको फ़ैसला करने वाला, फ़ैसला देने वाला न बनालें। कोई मामला हो, कोई बात हो और हर कोई बात हो और हर ऐसी चीज़ जिसमें दो रास्ते हो सकते हों। जब तक कि सिर्फ़ आपके ही रास्ते को सच्चा और उस पर चलने को ही मानते हों। और आपको अपना पैशवा और लीडर, और नमूना न बनालें। उस वक्त तक उनका ईमान लाना एतबार के क़ाबिल (भरोसे के लायक़) नहीं इतनी बात तो है कि जिस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़कर दिखलाई और सिखलाई। वही "नमाज़" अलहम्दुलिल्लाह चल रही है नमाज़ वहीं है जो आपने बताई

www.abulhasanalinadwi.org

थी, सिखलाई थी और जिस तरह पढ़ी थी। आपने फ़रमाया था **"सल्लू कमा रएतो मूनी उसल्ली"** नमाज़ ऐसी पढ़ो जैसी मुझे पढ़ता देखो।

अज़ीज़ों! लेकिन इसके बाद के जो मामलात काम काज हैं जिनको हम दुनयावी मामलात कहते हैं। **हालाँकि मुसलमानों का कोई मामला दुनयावी नहीं है हर मामला दीनी है** हर मामले से अल्लाह की रज़ा खुशी हासिल होती है, अल्लाह की नज़दीकी हासिल होती है, कामों में बरकत होती है अगर हम इस्लाम के हुक्म के मुताबिक़ करें। **दुनयावी कामों में हम आज़ाद नहीं है** कि नामों नमूद के लिए, शोहरत के लिए लोगों में बड़ा कहलाने के लिए जैसा चाहें वैसा करें अफ़सोस है कि हमने दुनिया के मामलात में बिल्कुल आज़ादी इखतियार कर ली है, छुट्टी ले ली है जिस तरह हम चाहे करें। किसी को कुछ कहने और एतराज़ करने का हक़ नहीं। हम मुसलमानों ने अपना एक दायरा बना लिया है। उस में से कुछ को चुन लिया है कि यह काम तो शरीअत के हैं दीन के हैं (बेशक नमाज़, नमाज़ की तरह हैं। मस्जिदें बनेगी। नमाज़ होंगी। लेकिन इसकें बाद तरका-तक़सीम करना हो तो हम आज़ाद हैं बहन को नहीं देंगे (मरने के बाद माल तक़सीम करना हो तो हम आज़ाद है बहन को नहीं देंगे।) अच्छे-अच्छे घराने हैं। नमाज़ रोज़े के बड़े पाबन्द, माल दौलत की भी कमी नहीं। लेकिन मालूम करो तो पता चलेगा कि बहन का हिस्सा नहीं दिया और नहीं देने का इरादा है यह किस क़द्र अफ़सोस की बात है

ऐसा ही शादी ब्याह का मामला है। इसमें हम बिलकुल

www.abulhasanalinadwi.org

आज़ाद हैं। हर वह काम करेंगे (चाहे शरिअत और सुन्नत के ख़िलाफ़ हो) जिसका रुस्मो रिवाज जारी हो। रुसमो रिवाज बढ़ती जा रही हैं ऐसी-ऐसी रुसमें कि अल्लाह की पनाह इसी तरह मरने के बाद की रुसमें सब को एक न एक दिन जाना है। आख़री वक्त सबका आना है। उसके बाद की रुस्में जिससे नाम हो, शोहरत हो, **तीजा, दसवां बीसवां, चालीसवां, पूरा पूरा क्रियाकरम करते हैं।** बताइये यह सब कहाँ से आया। **हिन्दुओं से ही हमने लिया है। इन सब का इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं हैं**

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम पूरी ज़िन्दगी (जीवन) का मॉडल (सांचा) नमूना लेकर आए हैं। इसमें इबादत (नमाज़, रोज़ा) भी हैं और ज़िन्दगी के सब काम करने के तरीक़े भी बतला दिए गए हैं **शादी, ब्याह, अक़ीक़ा, ख़तना, निकाह रुखसती, दहेज़ पैदा, मौत मरन सब के तरीक़े साफ़ साफ़ बतला दिए हैं मगर अफ़सोस है कि इन कामों में हमने अपने आपको आज़ाद कर लिया और बिलकुल आज़ाद समझ लिया है दहेज़ (जहैज़) का मामला यह है कि ऐसी बेशरमी के साथ और बेहयाई के साथ माँगनी की जाती है** कि लड़की इतना दहेज़ लेकर आए। जब घर में घुस पाएगी वरना सोच लो। और जब आ जाती है और दहेज़ कम लाती है तो उससे पीछा छुड़ाया जाता है और वह भी कैसी बेरहमी के साथ। इस काम में हमारे **हिन्दू भाई** तो बहुत बढ़े हुए हैं वह तो औरतों को जला तक डालते हैं बराबर पेपरों में अखबारों में यह खबरें आती रहती हैं। अफ़सोस है मुसलमानों में भी यह बाते आने लगी हैं। इस

www.abulhasanalinadwi.org

हद तक नहीं मगर यह ज़हन (ध्यान) बनने लगा है। **जान लीजिए। शादी का इससे कोई ताल्लुक़ नहीं है।** एक अच्छी लड़की है। अल्लाह ने ख़ूबसूरती और अच्छी आदतें दोनों चीज़े दी हैं और सबसे बढ़कर इस्लाम और ईमान की नैमत दी हैं। इससे बढ़कर और क्या चीज़ चाहिए। अगर वह एक लाख रुपये लाएं, एक करोड़ रुपये भी लाए **तो उसकें एक बार कलमा पढ़ लेने के बराबर नहीं** अकीदा ठीक है काम भी ठीक है। नमाज़ रोज़े की पाबन्द है। और अक़ीदे में तो औरतें ख़ूब मज़बूत होती है। उस पर शुक्र अदा करना चाहिए और यह कि अल्लाह तआला ने हलाल तरीक़े पर अपने घर को आबाद करने और ख़ानदान को बढ़ाने के लिए एक ज़रिया दिया। **इसका रुपये से क्या ताल्लुक है? दहेज़ बीच में घुसेड़ दिया है।** कहीं तिलक कहलाता है कहीं घोड़ा जोड़ा कहलाता है। **यह सब हमने हिन्दुस्तानियों से ली हैं।** अरब में कोई इन बातों को नहीं जानता है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलेहिव सल्लम के ज़माने में और आपके बाद सहाबा के ज़माने में शादी ऐसी सादी होती थी कि दूसरे मोहल्ले वालों को ख़बर तक नहीं होती थी कि आज शादी हो गई यहाँ तक कि इस शादी में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलेहिव सल्लम को भी तकलीफ़ देना ज़रूरी नहीं समझते थे। मदीना शरीफ़ में आप तशरीफ़ रखते हैं लेकिन शादी, की आपको इतला नहीं दी। जब आपसे (सल्लल्लाहो अलेहिव सल्लम) से मिलने आए तो मालूम हुआ की शादी हो गई। इस पर न आपने (सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम) ने कुछ कहा और नहीं शिकायत की कि ऐसी बेमुरव्वती की, हमें तक

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं बुलाया बरकत की दुआएं ही ले लेते। लेकिन उन्होंने इसे मुनासिब नहीं समझा कि कहीं हुज़ूर सल्लल्लाहुअलेहिव वसल्लम को तक़लीफ़ न हो।

मेरे भाईयों। यहाँ से दिल में पक्का इरादा करके जाईये और तै करके जाईये कि हम शरीअत पर चलेंगे, इस्लाम के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे अल्लाह और उसकें प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहिव सल्लम के हुक्मों की ताबेदारी करेंगे और उम्र भर इन पर चलते रहेंगे और इस्लामी शरीअत के मुताबिक़ देखें कि यह हलाल है या हराम, फ़लाँ चीज़ का बेचना जाईज़ है या नाजाईज़ झूट बोलने से परहैज़ करेंगे, धोका देने से परहेज़ करेंगे, सच बात कहने से अल्लाह खुश होगा और बरकत देगा और झूट बोलने में और धोका देने में कभी भी बरकत नहीं होगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है **"वमा अरसलना मिर रसूलिन इल्लालियु ताअबिइज़निल्लाह"** हमने कोई पैगम्बर नहीं भेजा। मगर यह कि उसकी ताअत की जाए, उसकी बात मानी जाए और उसके हुक्मों पर चला जाए। अल्लाह की इज़ाज़त से, अल्लाह के हुक्म से और सिर्फ़ यह नहीं कि आप पैग़म्बर मानते हैं, अदब करते हैं, दरूद शरीफ़ पढ़ते हैं और पढ़ना चाहिए मगर आपका (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का जिस से दिल खुश होता है **वह यह है कि आपके हुक्मों पर चला जाए। इससे हम गफ़लत बरतते हैं।**

नमाज़ों की पाबन्दी कीजिए, **बच्चों को दीनी तालीम दीजिए** और यह समझिये कि यह बहुत ज़रूरी है अगर सिर्फ़ यह हिन्दी

www.abulhasanalinadwi.org

पढ़ेंगे तो हिन्दी में हिन्दुओं की मज़हबी चीज़ें दाख़िल कर दी गई हैं। इससे हिन्दू मज़हब से और हिन्दुओं से मोहब्बत पैदा होगी और मुसलमानों से और इस्लाम की बातों से नफ़रत, शिकायत पैदा होगी जो बड़े भारी ख़तरे और हिलाकत की बात है। तो अगर सिर्फ़ हिन्दी पढ़ी (में हिन्दी का मुख़ालिफ़ (विरूद्ध) नहीं हूँ बल्कि सिर्फ़ हिन्दी ही पढ़ी जाए इसका मुखालिफ़ (विरुद्ध) हूँ) और यह कोई अच्छी और ख़ूबी की बात नहीं कि आदमी सिर्फ़ एक ही भाषा (ज़बान) पढ़े और दूसरी भाषा नहीं पढ़े और नहीं जाने। उर्दू इसलिए पढ़ाइये कि उसके ज़रिये से उनको (आपके बच्चे बच्चियों को) दीन की अच्छी और सच्ची बातें मालूम होंगी। दींनी हुक्म मालूम होंगे। कुफ़्र, ईमान, तौहीद, शिर्क का फ़र्क़ मालूम होगा और प्यारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़िन्दगी के हालात, आदत शरीफ़ा मालूम होंगी और आपकी ज़िन्दगी के वाक़िआत पढ़ेंगे तो हज़रत की इज़्ज़त, अज़मत, मोहब्बत उनके दिलों में पैदा होगी फिर औलिया अल्लाह के हालात पढ़ेंगे ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलेह अजमेरी के हालात पढ़ेंगे तो मालूम होगा कि वह कैसे हिन्दुस्तान आए और यहाँ की काया पलट दी और कैसे हज़ारों नहीं बल्कि लाखों इन्सान उनके हाथ पर ईमान लाए ऐसे ही दूसरे ओलियाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन से इन्सानों को फ़ैज़ पहुंचा कितने लोग सीधे रास्ते पर आए (गुनाह के काम छोड़े) कितने जानवर सिफ़्त इन्सान, फ़रिश्ता सिफ़्त इन्सान बन गये, कितनों को ईमान नसीब हुआ और उनकी दुनिया और आख़िरत (मरने के बाद की ज़िन्दगी) दुरस्त

www.abulhasanalinadwi.org

हो गई और जन्नती बन गए।

तो उनके हालात पढ़ने से (जो कि ज़्यादातर उर्दू में ही हैं) बच्चों को फ़खो नाज़ होगा और उन्हें इस की फ़िक्र होगी कि इस्लाम की दौलत और नैमत की किस तरह क़द्र और इज़्ज़त करें और उसको बचाने की कोशिश करें। अगर ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे बिल्कुल बे ख़बर उनको कुछ मालूम नहीं कि कौन से बड़े-बड़े गुनाह हैं और ऐसे में ऐसे काम उनसे हो जाएंगे जिन से ईमान चले जाने का डर है।

तो आप लोग अपने यहाँ दीनी मकतब क़ायम कीजिये। उर्दू पढ़ाना फ़र्ज़ समझ लीजिये और उनको इस क़ाबिल बनाईये कि उर्दू पढ़ सकें और वह उर्दू की अच्छी किताबें पढ़ सकें जिनसे इस्लाम की और मुसलमानों की अच्छी-अच्छी बातें उन्हें मालूम हो सकें और नेक मुसलमानों के जीवन के हालात मालूम हो सकें और इस्लाम के हुक्मों को भी अच्छी तरह मालूम कर सकें और समझ सकें और अमल कर सकें ।

आपके करीब ही तैंदवा में एक बड़ा मदरसा **"फलाहुल मुसलेमीन** है, उससे फ़ायदा उठाईये, वहाँ बच्चों को भी भेजिये मज़हब की तालीम दिलवाईये, अपने यहाँ मक़तब क़ायम कीजिये कि बच्चे क़ुरआन शरीफ़ तो खतम कर सकें, नमाज़, सीख सकें यह काम आपके लिए भी क़यामत में बख़शिश का ज़रिया बने गाँ, मोहल्ले और गाँव वाले भी उससे फ़ायदा उठा सकेंगे।

अगर आपने बच्चों को मज़हबी तालीम नहीं दिलाई तो ख़ुदा के यहाँ आपसे सवाल होगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में आता है

www.abulhasanalinadwi.org

"कुल्लुकुम राइन व कुल्लुकुम मसऊलुन अनरईय्यते ही" तुम में से हर एक हाकिम हैं और तुम में से हर एक से पूछा जाएगा उसके बारे में जो उसकें मातेहत (अन्डर) में है।

तुमने तुम्हारी औलाद को क्यों नहीं पढ़ाया, तुमने उनको इस्लाम की बातें क्यों नहीं सिखाई तुमने उनको अच्छी बातों से क्यों वाक़िफ़ नहीं कराया, उनके अक़ीदे दुरुस्त नहीं कराये उनको मज़हवी एहकाम, फ़र्ज़, वाजिब हलाल हराम वगैरह क्यों नहीं बताए और समझाए।

बस मेरे भाईयों। हम आपको मुबारक बाद देते हैं कि आप लोग एक दीनी जलसे के नाम पर अच्छी तादाद में जमा हो गए। यह आपके, दिली, लगाव और मोहब्बत की दलील हैं। और आपकी भलाई की दलील हैं। हाँ यह कोई सैर सपाटे करने की जगह नहीं है यह **टेली व्हीज़न नहीं है।** हाँ एक बात और कहना चाहता हूँ कि इस ज़माने में **"टेली व्हीज़न" का बड़ा बुरा रिवाज हो रहा है यह एक लानत है इसकें ऐसे ऐसे वाक़े सुनने में आए हैं, ईमान चले जाने के, अल्लाह तआला की तरफ़ से वबाल नाज़िल होने के कि बयान नहीं किये जा सकते, इससे आदमी का (दिमाग़ खराब होता है, घर में बच्चे औरतें, बच्चियें सब बेहयाई के सीन एक साथ बैठकर देखते हैं . (जिसकी मजहबे इस्लाम हरगीज़ हरगिज़ इजाज़त नहीं देता है)**

जिससे उनके अक़ीदे और उनके चाल चलन पर बहुत बुरा असर पड़ता है और घरों में उसकी वजह से नहूसत (बरबादी) बेहायाई, बेशर्मी, बेअदबी आती है और बरकतें उठ जाती हैं। और इससे गुनाहों के तरफ़ दिल लगने लगता है

www.abulhasanalinadwi.org

इसको बिल्कुल घर से निकाल दीजिए यह एक नापाक और गन्दी चीज़ है।

इसको तोड़िये फेंकये। कभी भी भूलकर न खरीदिये बल्कि ऐसा इंतज़ाम कीजिए कि घर वालों के कानों में मज़हबी बातें पड़े, सुने। हज़रत मुहम्मद सलल्लाहो अलैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी के वाक़आत बताए जाऐं बुज़ुर्गाने दीन के कारनामों को सुनाया जाए। वर्ना याद रखिये **मसजिदों की हिफ़ाज़त और ईमान की हिफ़ाज़त मुश्किल हो जाएगी।** यह बात चलाई जा रही है और फैलाई जा रही है कि मुसलमान नाम के मुसलमान रह जाएँ और काम के मुसलमान न रहें और मुसलमानों में और दूसरी क़ौमों में कोई फ़र्क़ न रहे तो इससे मसजिदों का, मदरसों का, आबाद रहना और इस देश में दीन का (इस्लाम का) क़ायम रहना मुश्कलि हो जाएगा।

हम एक बार फिर आपको मुबारक बाद देते हैं कि आप लोग अल्लाह और उसकें रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम पर यहाँ जमा हुए हैं और आपने हमारी बातें ग़ौर से सुनी भी लेकिन आप यहाँ से कुछ लेकर जाइए वर्ना ख़ुदा के वहाँ सवाल होगा कि तुम लोग जलसे में जमा हुए थे और इस्लाम के जानने वाले (दीन के जानने वाले) भी वहाँ आए थे और तुमको समझाया था तो तुम्हारी ज़िन्दगी में (जीवन बिताने में) क्या फ़र्क़ पड़ा क्या तबदीली हुई। तो भाईयों अक़ीदे की सहत, नमाज़ों की पाबन्दी औलाद की मज़हबी तालीम की तरफ़ ध्यान दीजिए। आप का बरताव अख़लाक़ ऐसे हों कि जो आपके पड़ोसी हों वह आपके बरताव से मुतासिर हों (उनके

www.abulhasanalinadwi.org

ऊपर आपके बरताव का अच्छा असर पड़े) उनकी जो मदद हो सकें आप करिये जिसे खाने की ज़रूरत हो उसे खाना खिलाईये जो रास्ता भूल गया हो उसे रास्ता बतलाइये। रास्ते से तकलीफ़ पहुंचाने वाली चीज़ को हटाईये। यह सब नेक काम हैं सबके लिए आप हमदर्द (दयालु) भले आदमी बनने की कोशिश कीजिये। फिर देखिये **आपको देख देख कर लोग इस्लाम में आऐंगे इस्लाम दुनिया में ऐसे ही फैला है-** अल्लाह तआला हम सबको इस्लाम के सीधे और सच्चे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया हसनतं व वफ़िल आख़िरति हसनतवं व क़िना अ़ज़ाबन्नार

ऐ हमारे पालने वाले अल्लाह तआला हमारी इस दुनिया की ज़िन्दगी को और मरने के बाद की ज़िन्दगी को अच्छी बना और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा आमीन, सुम्मा आमीन.

तम्मत

१२

"इस्लाम की बातों पर खुद अमल करिए और दूसरों को अमल करने के लिए समझाइये।

www.abulhasanalinadwi.org